13. 18वीं शताब्दी में क्षेत्रीय शक्ति

मराठा

- **अष्ट दिग्गज :** विजय नगर (कृष्णदेव राय से) कवियों का समूह
- **अष्ट प्रधान :** मराठा (शिवाजी)

बालाजी विश्वनाथ (1712-19)

- पेशवा पद शिवाजी द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था मे अष्ट प्रधान का प्रधानमंत्री जैसा अधिकारी था। और इसी क्रम में बालाजी विश्वनाथ सातवें पेशवा थे। किन्तु पेशवा को केन्द्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने का श्रेय इन्हें ही दिया जाता है।
- दिल्ली की गद्दी के संघर्ष में इन्होंने सैयद बंधुओं का साथ दिया और साथ ही मुगल शासक से मराठो को अधिक अधिकार दिलाया और शाहू (शिवाजी की पौत) के मुगलों की कैद से छुड़वाया।
- यह औरंगजेब के मकबरे तक नंगे पैर गया।

वाजीराव प्रथम (1720-40)

- मराठा संघ का वास्तविक संस्थापक वाजीराव प्रथम
- मस्तानी वाई युवती से सम्बध
- हिन्दूपदपादशाही के आदर्श का प्रचार जिसके तहत हिन्दू शासकों को एकजुट करने का प्रयास किया गया।
- शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध में सर्वाधिक कुशल।

  नोट : महाराणा प्रताप जनक है, शिवाजी ने अच्छी तरह प्रयोग तथा वाजीराव ने पूर्णत: सर्वाधिक कुशल।

बालाजी वाजीराव (1740-61)

- नाना साहब के नाम से लोकप्रिय।
- 1750 मे संखौला की संधि से पेशवा वास्तविक व संवैधानिक दोनों शक्तियां बना (उसे मराठो की संवैधानिक क्रांत्ति कहते है)
- अपनी राजधानी सतारा से पूना ले आया।
- मराठा शक्ति का चर्म और हिन्दूपक्षपादशाही का उल्लंघन
- दिल्ली की राजनीत्ति में हस्तक्षेप और यहाँ तक कि पंजाब से अहमद शाह अब्दाली के प्रतिनिधि को हटाकर अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया। और यही 1761 पानीपत के त्रितीय युद्ध का कारण बना।
- पानीपत्त त्रितीय युद्ध में मराठा सेना का प्रतिनिधित्व सदाशिव राव कर रहा था और तोप का संचालन ''इब्राहिम गार्दी'' कर रहा था। इस युद्ध में अफगानों ने मराठों को शिशक्त दी और अत्याधिक संख्या मे मराठे मारे गये।
- ''अभी तक यह माना जा रहा था कि मुगलो के उत्तराधिकारी मराठे ही होगे किन्तु उस युद्ध ने यह निर्णय कर दिया कि अब भारत पर शासन कौन नही करेगा''
- मराठे जहाँ अकेले लड़ रहे थे तो वही अब्दाली का साथ कई मुस्लिम शक्तिया (भारतीय) दे रही थी।

विशेष :

- पानीपत त्रितीय के बाद मराठे पेशवा माधवराव के नेतृत्व में पुन: उठ खड़े हुए। यहाँ तक कि हैदर अली जैसे सेनापत्ति को भी शिशक्त किन्तु उसकी आकस्मिक मृत्यु के बाद नारायण पेशवा बना जिसकी सम्भवत: रघुनाथ राव ने हत्या कर दी और खुद पेशवा बनना चाहा। किन्तु बाराभाई परिषद के दो महत्व पूर्ण सरदार नाना फर्ड़नवीस (घोड़े पर चढ़ना नही) जानते थे व महादजी ने माधवराव नारायण राव को पेशवा घोषित कर दिया। असंतुष्ट होकर रघुनाथ राव अंग्रेजो के पास चला गया और 1775 में उनसे सूरत की संधि की और यही प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82) का कारण बना। जो महादजी सिंधिया के प्रयासों से सालिवाई की संधि से रोगा गया।

बाजीराव द्वितीय :

- इसके समय तक महादजी सिंधिया अति शक्तिशाली बनकर उभर चुका था और यहां तक कि उसने फगौडे मुगल शासक को गद्दी पर बैठाया।
- शक्ति संघर्ष मे सिंधिया व होल्कर पेशवा पर अपनी पकड़ बनाना चाहते थे। जिसमे पेशवा सिंधिया के साथ आया। जब होल्कर ने इनकी संयुक्त सेना को हरा दिया तो उसने अंगेजों के साथ 1802 में बसीन की संधि कर ली और अंग्रेजी प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया और द्वित्तीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-06) का कारण बना।

सहायक संधि का क्रम मराठों में :

- पेशवा > भोंसले > सिंधिया > होल्कर।
- ''कहा जाता है कि होल्कर ने सहायक संधि नही स्वीकारी''।

त्रित्तीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-18):

- इस युद्ध की शुरूआत्त अंगेजों ने पिण्डारियों के दमन को लेकर की थी। वस्तुतः प्रारम्भ में पिण्डारी मराठा सेना में अवैधानिक सैनिक की तरह थे। युद्ध में विजयी होने के बाद वे लूटपाट करते थे।

नोट-विशेष :

- 1700-1707 का दौर मराठा स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है जिसमे राजाराम की पत्नी ताराबाई विशेष नेत्तृत्व कर्त्ता के रूप में उभरी।

जाट साम्राज्य

- औरंगजेब के खिलाफ जाट विद्रोहियों ने लोकप्रियता हासिल की जो वास्तव में धार्मिक विद्रोह न होकर कृषक विद्रोह था। राजाराम ने अकबर के मकबरे को लूटा।

  भरतपुर राज्य की स्थापना चूढ़ामन, वदन सिंह ने की। (राजधानी ढोग, जाटो का अफलातून राजा सूरज मल को कहा जाता है।

सवाई राजा जय सिंह :

- जयपुर नगर की स्थापना और वह भी आधुनिक नियोजन के अनुसार
- विधवा विवाह का सर्मथन और सामाजिक कुरूतियों का विरोध
- खगोल खास्त्री जिसमे नक्षत्रों व ग्रहों की स्थित के लिए जंतर-मंतर की स्थापना की जो निम्न स्थानों पर बनाये गये।
  1. दिल्ली
  2. जयपुर
  3. मथुरा
  4. उज्जैन
  5. बनारस।
- इसने एक खगोल सारणी भी बनाई जिसमें मुगल शासक के सम्मान में जिच मोहम्मद शाही नाम दिया। (मुहम्मद शाह रंगीला)
- युक्लिड की रचना रेखागणित के तत्व का संस्कृत मे अनुवाद किया तथा अन्तिम हिन्दू राजा जिसने अश्वमेघ यज्ञ किया।

राजा रवि वर्मा

- त्रवड़कोर का शासक
- बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी कवि चित्रकार, साहित्यकार, नाटक आदि इसी लिए इन्हें भारत का लिनयाड़ो दा विन्शी कहा जाता है।

हैदराबाद :

- 1724 में चिनाकिलिच खां या निजामुल्क ने स्वायत्त राज्य की स्थापना की।
- स्वतंत्रता प्राप्त के समय निजाम उसमान अली था। जिसने भारत विलय का विरोध किया और इत्तिहाबाद उल मुस्लिमिमी नामक सेना का गठन किया।

कर्नाटक :

- 1722 में शाहदुल्ला खां द्वारा स्वायत्त राज्य की स्थापना।

पंजाब

- गुरूनानाक जी द्वारा सिख धर्म की स्थापना के बाद पंजाब को स्वत्तंत्र सिख राज्य के रूप में स्थापित्त करने का श्रेय महाराजा रणजीत सिंह को दिया जाता है।
- सिख पहले 12 मिसलो में विभाजित थे जिसमें रणजीत सिंह सुकरचकिया मिसल से थे।
- अफगान शासक जमानशाह की तोपे वापस करने के बाद रणजीत सिंह की राजनैतिक महत्वकांक्षा व साम्राज्य निर्माण की बात शुरू होती है।
- रणजीत सिंह ने सबसे पहले लाहौर को जीता फिर क्रमश अमृत्तसर सुल्तान, पेशावर, कश्मीर को जीता और अपने साम्राज्य की राजधानी लाहौर को बनाया।
- उनके मंत्रि मण्डल में दीनानाथ और अजिजुद्दीन महत्वपूर्ण अधिकारी थे।
- विक्टर जाक्या नामक इतिहासकार उन्हें भारत का नेपोलियन कहा। भारत का नेपोलियम समुद्रगुप्त।

Note : भारत का शैक्सपीयर : कालिदास

- 1809 में अंग्रेजो के साथ इन्होंने अमृत्तसर की संधि की। जो एक प्रकार से अंग्रेजों की श्रेष्ठता स्वीकारने जैसा था।
- दो युद्धों के बाद ब्रिटिश समराज्य में विलय कर लिया